राष्ट्रीय शिक्षा नीति रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था है'

सीयूजे में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर कार्यशाला का आयोजन

ranchi@inext.co.in

RANCHI (17 Aug): सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ झारखंड (सीयूजे), रांची और राष्ट्रीय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर सीयूजे में पूर्व क्षेत्र के संयोजक विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया के संयुक्त संयोजन में विमर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें झारखंड के विद्यालय के शिक्षकों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के वीसी, समाजिक कार्य में कार्यरत एनजीओ एवं अन्य नागरिकों तथा स्टूडेंट्स के साथ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर चर्चा की गई.

जनता की सलाह जरूरी

सीयूजे के वीसी प्रो क्षिति भुषण दास ने कहा कि प्रत्येक नीति को लागू करने के लिए जनता की राय लेनी चाहिए. उन्होंने आत्मनिर्भर भारत कैसे हो इसके लिए प्रत्येक छात्र को घटना परिघटना एवं अन्य चीजों पर मंथन करने पर जोर दिया जाए. डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के वीसी प्रो तपन कुमार शांडिल्य ने भी अपने विचार रखे उन्होंने क्षेत्रीय भाषा पर शिक्षा व्यवस्था पर विशेष बल दिया है. राष्ट्रीय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षा विभाग प्रो. शरद सिन्हा ने कहा कि कोरोना काल ने हमें बहुत कुछ सिखाया. अब छात्र ब्लाण्डेड क्लासरूम में उभरेंगे.

● दीप जलाकर हुई कार्यक्रम की शुरूआत.

इनकी रही मौजूदगी

इस अवसर पर प्रो रत्नेश, संकायाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, डॉ शशि सिंह, विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, डॉ एसएल हरिकुमार, कुलसचिव डॉ विमल किशोर, डॉ विजय कुमार यादव, डॉ मानवी, डॉ मनोहर, डॉ नीरा, एंजेल नाग, एवं अन्य संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे.

हर वर्ग से राय की जरूरत

अध्यक्षता सीयूजे के वीसी प्रो क्षिति भूषण दास ने की. उन्होंने मुख्य अतिथि एवं कार्यशाला के पूर्व क्षेत्र के संयोजक अध्यक्ष सेंट्रल यूनिवर्सिटी साउथ बिहार के वीसी प्रो कामेश्वर नाथ सिंह का स्वागत किया. श्री सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरी तरह से लागू करने के लिए समाज के हर वर्ग से राय मशवरा करने की जरूरत है. उन्होंने कहा भारत एक विकसित एवं आत्मनिर्भर देश है. इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पाठ्यक्रम में 5+3+3+4 लाया गया है. उन्होंने कहा शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है. उन्होंने कहा यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इक्सवी शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर के प्रमुख प्रो प्रकाश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि यह बिल्कुल ही रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था है हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं को स्वीकृति पहचान और उसके विकास हेतु प्रयास करना है.

सीयूजे में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर कार्यशाला का किया गया आयोजन

नई शिक्षा नीति में गुणवत्तापूर्ण और दूरदर्शी सोच : प्रो कामेश्वर

रांची, प्रमुख संवाददाता। केंद्रीय विश्वविद्यालय साउथ बिहार के वीसी प्रो कामेश्वरनाथ सिंह ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। स्कूली शिक्षा में जो अलग व्यवस्था की जा रही है, उसमें यह शिक्षा दूरदर्शी व गुणवत्तापूर्ण है।

प्रो कामेश्वर केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) व राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद की ओर से बुधवार को आयोजित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरी तरह से लागू करने के लिए समाज के हर वर्ग से राय-मशविरा जरूरी है।

इस दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि भारतीय दार्शनिकों व उनके कृत्रित्वों को पाठ्यक्रम में अधिक शामिल किया जाए। अध्यक्षता कर रहे सीयूजे के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कहा कि हर नीति को लागू करने के लिए जनता की राय लेनी चाहिए, क्योंकि भारत एक लोकतांत्रिक देश है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हर स्कूल में सामुदायिक व्यस्तता कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए, ताकि स्कूल व उच्च शिक्षा के बीच के दूरी को कम किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की परिकल्पना भविष्य को देखते हुए कर गई है। इसमें शिक्षकों की भूमिका अहम है कि वे जिस तरह ज्ञान बांटेंगे, वैसा ही भविष्य तैयार करेंगे।

कार्यक्रम में प्रो रत्नेश विष्वक्सेन, डॉ शशि सिंह, डॉ एसएल हरिकुमार, डॉ विमल किशोर, डॉ विजय कुमार यादव, डॉ मानवी, डॉ मनोहर, डॉ नीरा, एंजेल नाग समेत स्कूलों के शिक्षक, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, एनजीओ प्रतिनिधि, नागरिक व विद्यार्थी शामिल हुए।

सीयूजे में बुधवार को आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते अतिथि।

प्राथमिक स्तर की शिक्षा बच्चों की मातृभाषा में दी जाए

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो तपन कुमार शांडिल्य ने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा व्यवस्था पर विशेष बल दिया है। कहा कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा बच्चों की मातृभाषा में दी जाए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, शिक्षा विभाग के प्रो शरद सिन्हा ने कहा कि अब छात्र ब्लेंडेड क्लास रूम में उभरेंगे। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर के प्रमुख प्रो प्रकाश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि नई शिक्षा नीति रोजगारपरक है।

नयी शिक्षा नीति लागू करने से पहले मशविरा जरूरी

■ सीयूजे में कार्यशाला, केंद्रीय विवि दक्षिण बिहार के कुलपति हुए शामिल

रांची . रांची. केंद्रीय विवि,साउथ बिहार के कुलपति प्रो कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को पूरी तरह से लागू करने के लिए समाज के हर वर्ग से राय-मशविरा करने की जरूरत है. स्कूली शिक्षा में जो अलग व्यवस्था की जा रही है, उनमें दूरदर्शी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है. प्रो सिंह बुधवार को केंद्रीय विवि, झारखंड (सीयूजे) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आयोजित कार्यशाला में बोल रहे थे. उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व विकास की शिक्षा पर जोर देने जरूरत है. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर के प्रमुख प्रो प्रकाश चंद्र अग्रवाल ने कहा कि यह बिल्कुल ही रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था है. सीयूजे के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत कैसे हो, इसके लिए प्रत्येक छात्र को घटना-परिघटना एवं अन्य चीजों पर मंथन करने की जरूरत है. स्कूलों में कम्युनिटी इंगेजमेंट प्रोग्राम होना चाहिए. डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के कुलपति प्रो तपन कुमार शांडिल्य ने क्षेत्रीय भाषा पर शिक्षा व्यवस्था पर विशेष जोर दिया. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के प्रो शरद सिन्हा ने कहा कि कोरोना काल ने हमें बहुत कुछ सिखाया. इस अवसर पर प्रो रत्नेश विष्वक्सेन, डॉ शशि सिंह, डॉ एसएल हरिकुमार, डॉ विमल किशोर, डॉ विजय कुमार यादव, डॉ मानवी, डॉ मनोहर, डॉ नीरा, एंजेल नाग आदि उपस्थित थे.

कार्यशाला में वक्ताओं ने कहा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति है रोजगारपरक व्यवस्था

- सीयूजे में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर कार्यशाला का आयोजन
- कुलपति ने कहा-देश के विकास के लक्ष्यों को पूरी करती है यह नीति

जासं, रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली के संयुक्त प्रयास से राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर एक दिवसीय विमर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शिक्षकों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, सामाजिक कार्य में कार्यरत एनजीओ एवं अन्य नागरिकों तथा विद्यार्थियों के साथ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर चर्चा की गई। अध्यक्षता कर रहे सीयूजे के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने मुख्य अतिथि एवं कार्यशाला के पूर्व क्षेत्र के संयोजक अध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय साउथ बिहार के कुलपति प्रो कामेश्वर नाथ सिंह का स्वागत किया। प्रो कामेश्वर नाथ सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरी तरह से लागू करने के लिए समाज के हर वर्ग से सलाह करने की जरूरत है। भारत एक विकसित एवं आत्मनिर्भर देश है। इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम लाया गया है। स्कूली शिक्षा में जो अलग व्यवस्था की जा रही है उनमें दूरदर्शी एवं गुणवतापूर्ण शिक्षा है। जन कल्याण से जग कल्याण संभव है। इसलिए व्यक्तित्व विकास की शिक्षा पर जोर देने की आवश्यकता है। भारतीय दार्शनिकों एवं उनके कृतित्वों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए न कि यूनान, रोम एवं अन्य विदेशी दार्शनिकों के कोटेशन को देखा जाए। कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। इस एक दिवसीय कार्यशाला में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर के प्रमुख प्रो प्रकाश चंद्र अग्रवाल ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर चर्चा की। कहा कि यह बिल्कुल ही रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था है।

नीति को लागू करने के लिए जनता की राय जरूरी : सीयूजे के कुलपति ने कहा कि प्रत्येक नीति को लागू करने के लिए जनता की राय लेनी चाहिए। भारत एक लोकतांत्रिक देश है। उन्होंने आत्मनिर्भर भारत कैसे हो इसके लिए प्रत्येक छात्र को घटना एवं अन्य चीजों पर मंथन करने पर जोर दिया जाए। हालिस्टिक एप्रोच के लिए छात्र व शिक्षक के बीच बेहतर समन्वय बहुत जरूरी है। हरेक स्कूल में कम्यूनिटी इंगेजमेंट प्रोग्राम आयोजित किया जाना चाहिए। ताकि स्कूल व उच्च शिक्षा के बीच के दूरी को कम किया जा सके। गुणवत्तायुक्त शिक्षा के साथ आउटडोर पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की परिकल्पना भविष्य को देखते हुए किया गया है।

सीयूजे में एक दिवसीय विमर्श कार्यशाला आयोजित

रांची : झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, रांची एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में पूर्व क्षेत्र के संयोजक विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय गया के संयुक्त संयोजन में एक दिवसीय विमर्श कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में झारखंड के विद्यालय के शिक्षकों विभिन्न विश्वविद्लायों के कुलपति समाजिक कार्य में कार्यरत एनजीओ एवं अन्य नागरिकों तथा विद्यार्थियों के साथ राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा पर चर्चा की गई । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भूषण दास ने मुख्य अतिथि एवं कार्यशाला के पूर्व क्षेत्र के संयोजक अध्यक्ष केन्द्रीय विश्वविद्यालय साउथ बिहार के कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह का स्वागत किया । श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को पूरी तरह से लागू करने के लिए समाज के हर वर्ग से राय मशवरा करने की जरूरत है । उन्होंने कहा भारत एक विकसित एवं आत्मनिर्भर देश ह इसी को ध्यान में रखतें हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पाठ्यक्रम में 5प्लस 3प्लस 3प्लस 4 प्लस लाया गया है । स्कूली शिक्षा में जो अलग व्यवस्था की जा रही है उनमें दूरदर्शी एवं गुणवतापूर्ण शिक्षा है, उन्होंने कहा हर भारतीय को संस्कृति एवं विरासत पर गर्व हो,राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत समाज बनान की जरूरत है । उन्होंने कहा जन कल्याण से जग कल्याण होती है इसलिए व्यक्तिव विकास की शिक्षा पर जोर देने की आवश्यकता है नैतिक शिक्षा दिया जाए भारतीय दार्शनिकों एवं उनके कृतित्वों को पाठ्यक्रम में अत्यधिक शामिल किया जाए न कि यूनान, रोम एवं अन्य विदेशी दार्शनिकों के कोटेशन को देखा जाए । उन्होंने कहा शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है । झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. क्षिति भुषण दास ने कहा कि प्रत्येक नीति को लागु करने के लिए जनता की राय लेनी चाहिए क्योंकि भारत एक लोकतांत्रिक देश है ।